श्री हरि कृष्णा प्रेमी कृत् रक्षा बंधन नाटक में राष्ट्रवाद

Musthak Husaain & Adhyaksha Hindi Vibag

डॉ. के मुस्ताक हुसैन,

अध्यक्ष हिंदी विभाग

129

ஆய்வுச் சுருக்கம்

நூற்றாண்டு காலகட்டத்தில் நிலவிய பக்தி இயக்கம் சார்ந்த படைப்புகள் வெளிவந்துள்ளன. உலக பார்வையில் பக்தி இசையோடும் பண்ணோடும் பாடலோடும் கலக்கப்பட்ட படைப்புகளும் தென்படுகின்றன. இவற்றில் ஸ்ரீ ஹரிகிருஷ்ண பிரேமி அவரால் படைக்கப்பட்ட ரக்க்ஷா பந்தன் என்னும் நூல் புகழ்பெற்ற ஒரு படைப்பாக விளங்குகிறது. இந்நூல் நாடக இலக்கிய வகைகளின் ஒன்றாகும் இவ் இலக்கியத்தில் பதிவான செய்திகள் தமிழ் இலக்கியத்திலும் பரவி காணப்படுவது இன்றைய காலகட்டம் வரை தமிழின் மேன்மையையும் இலக்கியத்தின் சிறப்பு எண் எடுத்து இயம்புகிறது.

राष्ट्र और राष्ट्रीयता का विवेचन इस प्रकार बताया गया है जैसे नेशन की उत्पत्ति लैटिन भाषा के नेशियो शब्द से हुई है,जिसका अर्थ जन्म अथवा जाती है। जातीय समूहों में राजनीतिक स्वतंत्रता तथा आत्म शासन की भावना के जागरण से राष्ट्रीय जातीय आग्रह सहित राजनीतिक इकाई का बोधक हुआ। 19 वीं शताब्दी में इस बौद्धिकता को स्थायित्व प्राप्त हुआ . अब राष्ट्रीय शब्द प्राप्ति अथवा आकांक्षित राजनीतिक स्वतंत्रता एवं प्रभुता के आदर्श का अर्थ अप्रकट करता है. इस प्रकार राष्ट्र एक निश्चित भू भाग में बसी उस जनसंख्या का सूचक है, जो राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित है. राष्ट्रीयता जनता की अंतर चेतना या अनुभूति का विषय है.यह चेतना साहित्य संगीत चित्रकला धर्म, दर्शन,पर्व आदि में अभिव्यक्त होती है. राष्ट्र की जनता से,भौगोलिक परिवेश से,सांस्कृतिक विरासत से, भाषा और साहित्य से,राष्ट्र की समस्त विशेषताओं से अनुराग ही राष्ट्रप्रेम है और यही राष्ट्रीय भावना है.

श्री हरिकृष्ण प्रेमी जी की नाटकीय प्रेरणा की पुष्ठभूमि है राष्ट्रीय आदर्श तथा नैतिक भावना हैं. ऐतिहासिक कहानियों में प्रेमी जी ने गांधीवादी राष्ट्रीय आदर्श की स्थापना की है. वे "स्वप्न भंग "नाटक की भूमिका में लिखते हैं - मैंने अपने नाटकों के द्वारा राष्ट्रीय एकता का भाव पैदा करने का प्रयत्न किया है. मेरे इस लघु यत्नों को राष्ट्रीय यज्ञ में क्या स्थान मिलेगा यह मैं नहीं जानता. वे जयशंकर प्रसाद युगीन हिंदी नाटक के प्रसिद्ध नाटकार और राष्ट्रभक्त कवि थे.प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक" रक्षा बंधन" सन् १९३८ में गुजरात के बहादुर शाह के आक्रमण के अवसर पर चित्तौड़ की रक्षा के लिए रानी कर्मवती द्वारा मुगल सम्राट हुमायूं को राखी भेजने का प्रसंग हैं. इस रचना का मूल उद्देश्य बलिदान, देशभक्ति तथा धार्मिक सद्भावना है. देशभक्ति राष्ट्रीयता का अनिवार्य, सनातन और सर्वप्रधान तत्व है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी पुराने तथा नए प्रकार के नाटककारों ने देशभक्ति की भावना अपने नाटकों में प्रकट की है.वास्तव में किसी भी राष्ट्रीय साहित्य में देशभक्ति की भावना उनके केंद्र में उपस्थित रहती है. इस युग में हिंदी नाटकों में देश अभिमान,देश के सूक्ष्म तथा सभी उपादानों के प्रति भक्ति, देश की प्रकृति से प्रेम तथा आत्म समर्पण की भावना विद्यमान हैं.

श्री हरिकृष्ण प्रेमी भारत भूमि और भारतीयता के परम भक्त है. रक्षा बंधन उनका श्रेष्ठ नाटक है, जिसमें देश की प्रकृति से प्रेम तथा देश के प्रति आत्मसमर्पण की भावना विद्यमान है. नाटक में चांदखां भारत के प्राकृतिक सुंदरता को देखकर महाराणा विक्रमादित्य से कहते हैं.-" कितना खुश नामा है आपका देश महाराज !आसमान से बातें करने वाले हरे हरे पहाड़ ,कल कल,छल छल, करते हुए नाचते हुए कूदते बहने वाले झरने, समुन्दर से होड़ करने वाले तालाब, बहिस्त के बगीचों को मात करने वाले बाग घने जंगल कुदरत ने गोया अपनी सारी दौलत यही बिखरे दी है. यहाँ के सुबह जिंदगी के गीत गाते हुए आते है. यहाँ की शाम

हमदर्दी की तान छोड़ती हुई जाती है.यहाँ की रात सेज बिछाती हुई आती है. तभी तो दुनिया इसे लालच की निगाह से देखती है.तभी तो दूर दूर के शाही लूटेरों को मुकाबला करना पड़ता है."२

प्रेमी के नाटकों में आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ- साथ मानव की गहनतम नैतिकता का भी स्वरूप मिलता है. इन्होंने एक सिद्धहस्त कलाकार के समान इसी नैतिकता के बल से मानवतत्व और दैवतत्व का एकाकार कर दिया है. यही इनकी बहुत बड़ी विशेषता है. रक्षा बंधन में नैतिक आदर्शों का चित्रण किया गया है.हुमायूं अच्छे मुसलमान के भाँति रानी कर्मवती के राखी स्वीकार करता है और सगे भाई का कर्तव्य निर्वाह करता है.हुमायूं महाराणा विक्रमादित्य के दूत से कहता है – "मेरे सूने आसमान मैं उन्होंने मोहब्बत का चाँद चमकाया है. उन्होंने मुझे राखी भेजी है. मुझे अपना भाई बनाया है. (दूत से) बहन कर्मवती से कहना हुमायूं तुम्हारी माँ के पेट से पैदा ना हुआ तो क्या ?वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है. "३और स्थान पर नाटककार ने हुमायूँ के चरित्र में उच्च नैतिक गुणों का समावेश किया है. हुमायूं महाराणा विक्रमादित्य से कहते हैं- "हमें अबे दुनिया की हर किस्म की तंग दिल्ली के खिलाफ़ जिहाद करना चाहिए .हमारा काम धर्म के गले पर छुरी चलाना नहीं ,भाई को गले लगाना है .भाई को ही नहीं दुश्मन को भी गले लगाना है. दुनिया के हर इंसान को अपनी दिल के मोहब्बत के दरिया में छुपा लेना है."४ इस नाटक में राजपूतों के चरित्र में उज्ज्वल नैतिक गुणों का समावेश किया है. गुजरात के बादशाह बहादुर शाह से अपने धर्मगुरु शेक औलिया कहते हैं-" राजपूत दरिया दिल होते हैं. उनकी दुश्मनी लड़ाई के मैदान तक ही रहती है.फिर वे बाप का बदला बेटे से नहीं लेते. राजपूत किसी कौम के दुश्मन नहीं,वे तो बेइंसाफी के दुश्मन और इन्साफ के साथी है."५

भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में आलोच्यकाल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है.इस काल में राजनीतिक पराधीनता का बोध अत्यंत तीव्र हुआ.प्रेमी के नाटकों में भी इस लहर का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है.दासता के तीव्र अनुभूति ने राजनीतिक चेतना को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया उनके नाटकों में अंग्रेजों की राज्य की सत्ता से मुक्ति पाने की व्याकुलता तथा स्वाधीनता प्राप्ति की तीव्र उमंग झलकने लगी. रक्षा बंधन में भी इसी भावना को चित्रित किया गया है. कर्मवती भील राजा से कहती है – "देश का अपमान क्या तुम्हारा अपमान नहीं है, जब देश पराधीन होगा तब तुम और तुम्हारा कुटुम्ब गुलामी की जंजीरों से मुक्त रह सकेगा?"६ प्रेमी के नाटकों में स्थान - स्थान पर भौतिक उत्कर्ष की अभिव्यंजना हुई है.रक्षाबंधन में कर्मवती बाघसिंह से कहती है - "इस समय मेरे स्वामी नहीं,उनके रहते मेवाड़ की ओर आंख उठाने का किसी में साहस था? उनके आतंक से मेवाड़ के बाहर भी दूर दूर तक अत्याचारियों के प्राण कांपा करते थे. मेवड़ की सीमा पर पैर रखने का तो साहस किसे हो सकता था? " और एक स्थान पर हुमायूं मेवाड़ के दूत से मेवाड़ के राजपूतों के शौर्य की प्रशंसा करते हैं –"राजपुतों से हमारी फौज कैसे खौफ खाती थी, राणा सांगा उन्हें तो खुदाने पैलाद से बनाया था. उनकी तिरछी नज़र कयामत का पैगाम था. मैं मेवाड़ की बहुत इज्जत करता हूँ और हर एक बहादुर आदमी को करनी चाहिए. वहाँ की खाक भी सर पर लगाने की चीज़ है. वहाँ के जर्रे में बहिश्त है."

प्रेमी के नाटकों में आत्मसम्मान तथा राष्ट्रीय सम्मान की बलिवेदी पर न्योछावर हो जाने की ज्वलंत चेतना दृष्टिगोचर होती है. देशहित पर मर मिटने का अमर संदेश उनके नाटकों में परिव्याप्त है. रक्षाबंधन में कर्मवती के भीतर आत्म बलिदान की ओजस्विनी भावना देखी जा सकती है-" उठो भूखे सिंह की तरह शत्रु सेना पर टूट पड़ो.लड़ो और लड़ते लड़ते मेवाड़ की मान रक्षा करो, विजय और वीरगति दोनों श्रेष्कर है"८. और एक स्थान पर कर्मवती कहती है.-" भगवान ने मेवाड़ जैसी स्वर्ग से सुन्दर भूमि हमें सौंप कर अपना कर्तव्य पूरा कर दिया. अब उसकी रक्षा करना तो हमारा ही साहस का कार्य है. अभी न जाने कितनी बहनों को अपने भाई, कितनी माताओं को अपने पुत्र और कितनी पत्नियों को अपने पति, इस भूमि को भेंट करना पड़ेगा."९ राजमाता जवाहरबई की वीरता की प्रशंसा मुल्लु खां बहादुर शाह से करता है -" उसकी तलवार मौत का पैगाम थी उसे इस तरह लड़ते देखकर राजपूतों की फौज जोश के नशे में पागल हो गई. हम मुसलमान देवी देवताओं को नहीं मानते, पर वह सचमुच देवी है. आप से क्या कहूँ उसके अंगारों से आंखें देखकर हमारी तोपे गोले उगलना भूल गई."१०

यह स्वर्णिम अवसर था अतीत के दुष्परिणामों को याद दिलाते हुए नाटककारों ने जातीय एकता का संदेश दिया है. हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक लिखने का उद्देश्य यही था कि हिंदू मुसलमानों में एकता की स्थापना करें. रक्षा बंधन नाटक में

महाराणा विक्रमादित्य धार्मिक विद्वेष का विरोध कर, सद्भावना प्रकट करते हैं.वे चांदखां से कहते हैं –" मजहब मनुष्य के हृदय के प्रकाश का नाम जो मजहब का नाम लेकर तलवार चलाते हैं,वे दुनिया को धोखा देते हैं. धर्म का अपमान करते हैं.सच्चा वीर वही है, खरा राजपूत वही है, जो ना हिंदुओं को अन्याय का हिमायती है और ना मुसलमानों के.वह न्याय का साथी और आजादी का दीवाना है.उसे अत्याचारी हिंदू से ईमानदार मुसलमान ज्यादा प्यारा है. वह अत्याचारी मुसलमान का जितना दुश्मन हैं उतना बेईमानी और विश्वासघाती हिंदू का उससे कहीं अधिक शत्रु."११

साम्प्रदायिक एकता के साथ-साथ प्रेमी ने उपेक्षित वर्ग का सजग तथा सचेत करने की दिशा में सराहनीय प्रयास किया. प्रेमीजी इस मत के हैं कि ऊँच-नीच की भावना दूर हो जाने पर ही राजनीतिक एकता सुदृढ़ हो सकती है. रक्षा बंधन साम्प्रदायिकता तथा जातीय एकता के उत्थान की कामना से अभी प्रेरित होकर लिखा गया है.महाराणा विक्रमादित्य भील राजा का नीचे कहकर अपमान करते हैं, तब जवाहर बाई कहती है-. "जिन्हें तुमने अभी नीच कहा हैं,वे वसुंधरा के लिए भगवान के आशीर्वाद है,वरदान है, भील राज का अपमान कर तुमने मेवाड़ पर देवताओं के अभिशाप को आमंत्रित किया है. तुम्हारे मुँह से ऐसी घृणित बात कैसे निकली."१२

मानवतावाद वह चीज़ है, जो कि हम सब मनुष्यों को जोड़ती है. अगर हम सब में मानवता खत्म हो जाए तो शायद यह संसार जीवन के लायक ही नहीं रहेगा. सारी समस्याओं क जड़ है मानवता. इसलिए यह आवश्यक है कि हम सब मानवता के पथ पर आगे बढें .मानवता का पाठ हमें हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में उपलब्ध है. रक्षाबंधन नाटक में बादशाह हुमायूं उत्कृष्ट मानवता का पाठ बढ़ाता है. – "तातरखां! देहली की सल्तनत तो चीज़ ही क्या है? सारी दुनिया की सल्तनत से बढ़ कर एक सल्तनत है, वह है इंसानियत की सल्तनत, मोहब्बत की सल्तनत, धन दौलत का ख्याल छोड़ और इंसानियत की सल्तनत कायम कर."१३

श्री हरिकृष्ण प्रेमीजी का हिंदी नाटककारों में प्रमुख स्थान है. उन्होंने ऐतिहासिक प्रसंगों को लेकर हमें राष्ट्रीय जागरण, सुरक्षा का संदेश,आत्मा बलिदान की भावना, राष्ट्रोत्थान संबंधी भावों की अभिव्यक्ति, राष्ट्रीय एकता का संदेश, गांधीवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति,विश्व बंधुत्व की भावना, वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ,परतंत्रता की भावना एवं स्वाधीनता की तीव्र आकांक्षा आदि के प्रति राष्ट्रीय स्वर सुनने को मिलता है. यह सभी भावनाएँ"रक्षा बंधन" नाटक में भी उपलब्ध है.

१ विनय मोहन शर्मा - साहित्य शोध समीक्षा, पृष्ठ संख्या.२०
२ हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन,पृष्ठ संख्या.४९
३हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन,पृष्ठ संख्या. १२१
४हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन,पृष्ठ संख्या.२९
५ हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन, पृष्ठ संख्या. ८६
६ प्रेमी - रक्षा बंधन,पृष्ठ संख्या.५०
८श्री हरिकृष्ण प्रेमी - रक्षा बंधन, पृष्ठ संख्या.३३
९श्री हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन, पृष्ठ संख्या.७२
१० श्री हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन, पृष्ठ संख्या.७६
११श्री हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षाबंधन, पुष्टि संख्या.२१-२२
१२ हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन, पृष्ठ संख्या.१०
१३ श्री हरिकृष्ण प्रेमी- रक्षा बंधन,पृष्ठ संख्या.८३

डॉ. के. मुस्ताक हुसैन,
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
भारत यूनिवर्सिटी तांबरम, चेन्नई.